1

आराधना का केन्द्र, परमेश्वर

हमारी आराधना का केन्द्र परमेश्वर होना चाहिए (मत्ती 4:10)। बेशक, हमारी गतिविधियां, धार्मिक कार्यक्रम और समर्पण आवश्यक है, परन्तु हमारी आराधना के केन्द्र बिन्दु के रूप में ये परमेश्वर के लिए विकल्प नहीं हैं।

जॉन ई. बरखर्ट ने लिखा है कि आराधना का आधार परमेश्वर का ज्ञान होना चाहिए:

> ज़िम्मेदार आराधना परमेश्वर को *मानती* है। इसका आरम्भ इस अनुग्रहित सोच से हुआ कि हम से आगे एक योग्य वास्तविकता है; यह इस आशीषित धन्यवाद में बढ़ती है जो परमेश्वर है; और अपने चर्म पर यह परमेश्वर के अनुग्रहकारी होने के छलकते आनन्द से परिपूर्ण हो जाती है, जिससे अवसर पर स्तुति के नोट्स प्रकाशितवाक्य 7:12 की तरह यह कहते हुए ''हमारे परमेश्वर की स्तुति, और महिमा, और ज्ञान, और धन्यवाद और आदर, और सामर्थ, और शक्ति युगानुयुग बनी रहे। आमीन।''[1]

परमेश्वर को अपनी आराधना का केन्द्र बनाने के लिए हमारे लिए परमेश्वर को समझना आवश्यक है। हम किसी की आराधना कैसे कर सकते हैं यदि हमें पता ही न हो कि वह कौन है और क्या करता है? पौलुस ने अथेने के लोगों को बताया कि वे किसी अज्ञात ईश्वर की मूर्ति की पूजा कर रहे थे। वे अज्ञानता में आराधना कर रहे थे, क्योंकि वे सच्चे परमेश्वर से अनजान थे। उसे जानना आराधना करने के लिए आवश्यक है।

परमेश्वर को जानना

बाइबल हमारे परमेश्वर को जानने की हमारी आवश्यकता पर ज़ोर देती है। उसके साथ हमारे सम्बन्ध के लिए और उसके द्वारा स्वीकृत होने के लिए यह आवश्यक है।

> यहोवा यों कहता है, बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर घमण्ड न करे, न वीर अपनी वीरता पर, न धनी अपने धन पर घमण्ड करे; परन्तु जो घमण्ड करे वह इसी बात पर घमण्ड करे, कि वह मुझे जानता और समझता है, कि मैं ही वह यहोवा हूं, जो पृथ्वी पर करुणा, न्याय और धर्म के काम करता है; क्योंकि मैं इन्हीं बातों से प्रसन्न रहता हूं (यिर्मयाह 9:23, 24)।

> और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर को जानें (यूहन्ना 17:3)।

वापस आने पर यीशु ''जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, उनसे पलटा लेगा'' (2 थिस्सलुनीकियों 1:8)।

रुकावट क्या है ?

कुछ बातें हैं, जो हमें परमेश्वर को जानने से रोक सकती हैं। इनमें धन (मरकुस 4:19), जो कुछ परमेश्वर ने बनाया है, उससे अस्वस्थ मोह (रोमियों 1:25), बुरे काम (कुलुस्सियों 1:21), सम्पत्ति से घिरे होना (लोभ; कुलुस्सियों 3:5), आत्मश्लाघा (2 तीमुथियुस 3:2) किसी से अत्यंत प्रेम रखना और दूसरों से सम्बन्ध अच्छे न होना (देखें 1 पतरस 3:7), मानवीय खोजों और रचनाओं के साथ-साथ व्यावसायिक मांगें शामिल हैं। हमारे लिए परमेश्वर से बड़ी और कोई बात नहीं होनी चाहिए। कोई भी व्यक्ति या वस्तु जो परमेश्वर से अधिक हमारे निकट है, हमें उसे जानने से दूर रख सकती है। एक आंख बंद करके दूसरी आंख खोलकर उसके सामने सिक्का रखने से सूर्य को देखने में रुकावट पड़ सकती है। हमारी कोई भी प्रिय चीज़, परमेश्वर की आराधना करने में रुकावट बनती है, क्योंकि इसने हमारी श्रद्धा और आराधना की वस्तु के रूप में परमेश्वर की जगह ले ली है।

सहायक क्या है ?

उन चीज़ों को दूर रखना, जिनसे परमेश्वर को जानने में रुकावट पड़ सकती है और उसकी आराधना में अड़चन ही काफी नहीं है। हमें परमेश्वर को जानने के सकारात्मक कदम उठाने आवश्यक हैं। हम उसे निम्न बातों से जान सकते हैं ...

1. *उसकी सृष्टि से।* परमेश्वर का स्वभाव और शक्ति उसकी सृष्टि अर्थात् जीवन के छोटे से छोटे रूप से लेकर रात को आकाश को खूबसूरत बनाने वाली शानदार आकाश-गंगाओं के द्वारा पूरे संसार में दिखाई गई है। ''क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ्य, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं ...'' (रोमियों 1:20)। ''आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रकट कर रहा है'' (भजन संहिता 19:1)। हमारा वर्तमान संसार आविष्कारों और मनुष्य के कामों के इर्द-गिर्द बना है, जो कई बार उसे उसकी महिमा जो उसकी बनाई गई चीज़ों से प्रकट होती है, को धुंधला कर देता है।

हम कला, मैकेनिकी, इलैक्ट्रॉनिक्स और मानवीय योग्यता की अन्य प्रस्तुतियों की अपनी उपजों से प्रभावित होते हैं। हम मनोरंजन, एथलेटिक और व्यापार के क्षेत्र में दक्षता पाने वालों को अपना आदर्श मानने लगते हैं। विज्ञान तथा चिकित्सा के विकास से इन क्षेत्रों में लोगों को महिमा दी जाने लगी है, जिसका हकदार केवल परमेश्वर है। मनुष्य के काम भी अक्सर हमें परमेश्वर के हाथों के कामों के बजाय अधिक प्रभावित करते हैं। मनुष्य की कोई प्राप्ति परमेश्वर के सामर्थी कामों का मुकाबला नहीं कर सकती।

2. *पवित्र शास्त्र।* परमेश्वर का वचन लोगों, परिवारों, गोत्रों, राष्ट्रों तथा संसार से मिलने पर उसके स्वभाव के कई पहलुओं को दिखाता है। आरम्भ से अन्त तक, बाइबल मनुष्यों और संसार के मामलों में परमेश्वर की गतिविधियों के बारे में बताती है। यह सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर के साथ आरम्भ होती है, और सारी सृष्टि का अन्त करने वाले परमेश्वर के साथ समाप्त होती है। मनुष्य का किया कोई भी काम परमेश्वर की सामर्थ या उसकी निजी खूबियों से मिलाया नहीं जा सकता। उसका प्रेम, अनुग्रह और दया तुलना से बाहर हैं। वैसे ही संसार में विघटनकारी और विनाशकारी

बुराई से उसकी घृणा भी अतुलनीय है।

3. *परमेश्वर जीवित है।* पौलुस ने कहा कि मसीह उसमें जीवित था (गलातियों 2:20)। उसने यह भी लिखा कि हमें उसका अनुकरण करना चाहिए जैसे वह मसीह का अनुकरण करता था (1 कुरिन्थियों 11:1)। पौलुस को देखकर मसीह लोग मसीही को देख सकते थे, जो उसमें रहता था। हम बाइबल के महान लोगों के जीवनों में परमेश्वर को देख सकते हैं। वैसे ही हम आज अपने संसार में परमेश्वर का भय मानने वाले लोगों में उसे जीवित देख सकते हैं।

4. *नैतिक और आत्मिक नियम।* परमेश्वर द्वारा दिए गए नैतिक और आत्मिक नियम हमें उसके स्वभाव के बारे में बताते हैं। ये अच्छे और सराहनीय गुण हैं, जिनका अनुसरण किए जाने पर समाज महान बनेगा और संसार में शान्ति, आनन्द और व्यवस्था कायम हो सकती है। परमेश्वर की धार्मिकता और नैतिक भलाई को समझ कर हमें उसका आदर करना चाहिए। भजनकार ने कहा है, ''मैं यहोवा के धर्म के अनुसार उसका धन्यवाद करूंगा, और परमप्रधान यहोवा के नाम का भजन गाऊंगा'' (भजन संहिता 7:17)। आज परमेश्वर के स्वभाव रहित रह रहे समाजों में अनैतिकता, अस्त-व्यस्तता, निर्दयता वहशीपन और अशिष्टता पाई जाती है।

5. *उपाय के द्वारा उसकी संभाल।* परमेश्वर को अपनी सृष्टि की समयानुसार आवश्यकता पड़ने पर उसकी संभाल करने में देखा जा सकता है। ''उस ने अपने आप को बे-गवाह न छोड़ा; किन्तु वह भलाई करता रहा, और आकाश से वर्षा और फलवन्त ऋतु देकर, तुम्हारे मन को भोजन और आनन्द से भरता रहा'' (प्रेरितों 14:17)।

परमेश्वर ने अपनी सृष्टि को अपने लाभकारी कार्यों का प्रमाण दिया है। जीवन का हर सुन्दर पहलू उसकी सम्भाल की घोषणा करता है। पृथ्वी, उसकी बनाई पृथ्वी देखने के लिए सुन्दर दृश्य सुनने के लिए मधुर आवाज़ें, खाने के लिए स्वादिष्ट भोजन, खोजने के लिए उपयोगी वस्तुएं और करने के लिए उत्तेजनापूर्ण कार्य उपलब्ध कराती है। उसका संसार कई आशीषें देता है, जो मन को आनन्दित करती और जीवन को आनन्ददायक और जीने योग्य बनाती हैं। वह अपनी भलाई और करुणा सब पर (मत्ती 5:45; रोमियों 2:4), विशेषकर उन पर जो उससे प्रेम करते और उसकी सेवा करते हैं (रोमियों 8:28) दिखाता है।

हमें परमेश्वर द्वारा स्वयं उस सब को अनुभव करने के लिए बुलाया गया है, जैसा वह है। दाऊद ने उस पर भरोसा रखने वालों की आवश्यकताओं के लिए प्रभु के जवाब का वर्णन किया है। उसने उन्हें उसकी संभाल और पूर्व प्रबन्ध को जानने के लिए परमेश्वर को परखने का सुझाव दिया:

> मैं यहोवा के पास गया, तब उस ने मेरी सुन ली,
> और मुझे पूरी रीति से निर्भय किया।
> जिन्होंने उसकी ओर दृष्टि की उन्होंने ज्योति पाई;
> और उनका मुंह कभी काला न होने पाया।
> इस दीन जन ने पुकारा तब यहोवा ने सुन लिया,
> और उसको उसके सब कष्टों से छुड़ा लिया।
> यहोवा के डरवैयों के चारों ओर उसका दूत

छावनी किए हुए उनको बचाता है।
परखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है!
क्या ही धन्य है वह पुरुष जो उसकी
शरण लेता है! (भजन संहिता 34:4-8)।

परमेश्वर उन्हें जो उस पर भरोसा रखते और जो उसकी इच्छा पूरी करने के इच्छुक हैं, निराश नहीं करता। वह उन्हें जो धर्म के मार्ग पर चलते हैं, किसी अच्छी वस्तु की कमी नहीं आने देता (भजन संहिता 84:11, 12)।

6. *आज्ञाकारिता।* परमेश्वर की इच्छा मानकर हम उसके स्वभाव के गुणों को जान सकते हैं। उसने अपने आप को उस नमूने के रूप में पेश किया है, जिसके अनुसार हमें जीवन बिताना चाहिए (1 पतरस 1:16)। जिस प्रकार हम एक-दूसरे व्यक्ति की जीवनशैली को अपनाकर उसे समझ सकते हैं, वैसे ही हम परमेश्वर के स्वभाव को पाने और उसकी इच्छा को मानकर उसे ग्रहण करने की इच्छा करके उसे समझ सकते हैं। जो लोग परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते वे उसे नहीं जानते हैं (1 यूहन्ना 2:3-5) और न उसे जान सकते हैं।

7. *यीशु।* परमेश्वर ने अपने आप को यीशु के द्वारा बिल्कुल पूर्ण रूप से प्रकट किया है (यूहन्ना 1:18)। उसके बिना हम परमेश्वर के प्रेम, दया, अनुग्रह और भलाई को नहीं समझ सकते थे। नई वाचा के यीशु के लहू के द्वारा (मत्ती 26:28) परमेश्वर की कृपा को प्रकट किया गया है। यिर्मयाह ने नई वाचा के अधीन लोगों के बारे में भविष्यवाणी की, ''... सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे; क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा'' (यिर्मयाह 31:34; देखें इब्रानियों 8:12क)। नई वाचा के अधीन लोगों को परमेश्वर को जानने का एक ढंग है कि हम यीशु की मृत्यु के द्वारा उसके द्वारा उपलब्ध करवाए गए दयापूर्ण छुटकारे में उसके स्वभाव को देखते हैं। अपने स्वभाव की परिपूर्णता के द्वारा यीशु ने हमें परमेश्वर के शानदार स्वभाव की एक झलक दे दी है।

परमेश्वर को जानने के द्वारा हमें पता चल सकता है कि इस महान, भयदायक और अद्‌भुत जीव से कैसे सम्बन्ध बनाना है। जब तक हम किसी व्यक्ति को जानते या समझते नहीं हैं तब तक हम उसका आदर या सम्मान नहीं करेंगे। यही बात परमेश्वर की आराधना में लागू होती है: जब तक हम उसे जानते नहीं तब तक हमें समझ नहीं आ सकती कि उसकी आराधना कैसे की जानी चाहिए।

परमेश्वर जो है, उसके लिए उसकी आराधना करना

परमेश्वर की आराधना करने की इच्छा करने पर हमें उसके स्वभाव की कुछ बातें समझना आवश्यक है। यदि हम उसके स्वभाव को समझते हैं, तो हम उसके स्वभाव और महानता से भयभीत होंगे। इसी कारण हम उसकी आराधना करना चाहेंगे।

1. *वह आत्मा है* (यूहन्ना 4:23, 24) और बिना भौतिक तत्व के है। वह मनुष्य की आंख के लिए अदृश्य है (कुलुस्सियों 1:15; 1 तीमुथियुस 6:16)। परमेश्वर की आराधना करते हुए हमें उसके भौतिक तत्व वाला होने की कल्पना करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

आत्मिक अर्थ में हम देखे न जा सकने वाले को देखते हैं। आत्मिक रूप में हम परमेश्वर की उपस्थिति को महसूस कर सकते हैं, चाहे हम उसे छू नहीं सकते, देख नहीं सकते या उसे सुन नहीं सकते। व्यावहारिक रूप से बात करते हुए हम उन चीज़ों में देख सकते हैं, जो उसने बनाई हैं (रोमियों 1:20) और उसके बनाए हुए संसार में और मनुष्य के मामलों में उसके चल रहे कार्यों को समझ सकते हैं।

2. *वह सृष्टिकर्त्ता है* और सब विद्यमान जीवों से बढ़कर अनादि शक्ति उसके पास है (रोमियों 1:20)। वह सबके ऊपर परमेश्वर है (इफिसियों 4:6)। ऐसी शक्ति भय योग्य है। संसार की विशालता और इसमें पाई जाने वाली ऊर्जा पर ध्यान करें। परमेश्वर की तुलना में उसकी सृष्टि कुछ भी नहीं और इस कारण हम उस पर निर्भर हैं। परमेश्वर की सृष्टि को देखकर हम उसकी महानता को महसूस करना आरम्भ कर सकते हैं। हम परमेश्वर से मुकाबला नहीं कर सकते क्योंकि हमारी सामर्थ उस महान जीव की सामर्थ के मुकाबले, जिसने सब कुछ बनाया कुछ भी नहीं है (1 कुरिन्थियों 1:25)। अपनी महानता के कारण वह हमारी ओर से सबसे बड़े आदर, यानी जो कुछ हमारे पास है और जिसे हम जानते हैं सबसे अधिक आदर का हकदार है। हमें सृष्टि की पूजा करने के बजाय अपने सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर की आराधना और सेवा करनी चाहिए (रोमियों 1:25)।

3. *उसमें श्रेष्ठ बुद्धि है,* जो उसकी सृष्टि में प्रकट की गई है। पौलुस ने यह तुलना की: ''... परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों के ज्ञान से ज्ञानवान है'' (1 कुरिन्थियों 1:25क)। अधिकतर समाजों में श्रेष्ठ बुद्धि वाले लोगों का बहुत आदर किया जाता है। अपनी असीम बुद्धि और ज्ञान के लिए जो सारी मनुष्य जाति की बुद्धि को मिलाने पर भी उससे अधिक है, परमेश्वर की सराहना की जानी चाहिए।

4. *वह सब कुछ जानता है।* पौलुस ने यह लिखते हुए कि परमेश्वर सब कुछ जानता है, परमेश्वर की खूबी का बयान किया है। वह हमारे विचारों को जानता है, हम चाहे कहीं भी क्यों न हों (भजन संहिता 139:1-12)। हम आश्वस्त हो सकते हैं कि उसकी आराधना करने के लिए हमारे कमज़ोर से कमज़ोर प्रयासों की उसे खबर है। उसकी नज़र से कुछ भी बच नहीं सकता (इब्रानियों 4:13)। लोग कई बार हमें नज़रअंदाज़ करते हैं तब भी जब हम उनकी तारीफ करना चाह रहे होते हैं। परमेश्वर की आराधना बेकार नहीं है। न केवल वह हमारी शारीरिक गतिविधियों को देखता और सुनता है बल्कि उसे यह भी पता होता है कि हर आराधक के मन में क्या है।

5. *वह सर्वव्यापक है।* ''फिर यहोवा की यह वाणी है, क्या कोई ऐसे गुप्त स्थानों में छिप सकता है, कि मैं उसे न देख सकूं? क्या स्वर्ग और पृथ्वी दोनों मुझ से परिपूर्ण नहीं हैं?'' (यिर्मयाह 23:24)। इस गुण से संकेत मिलता है कि हम परमेश्वर की आराधना कहीं भी कर सकते हैं, चाहे हम अकेले हों या बहुत लोगों के साथ या छोटी सी मण्डली के साथ। ''क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहां मैं उन के बीच में होता हूं'' (मत्ती 18:20)।

परमेश्वर आत्मा है, इसलिए उसकी उपस्थिति एक ही समय में हर जगह होना सम्भव है। इस गुण के कारण वह सर्वज्ञानी परमेश्वर है। वह जब हम आराधना करते हैं तब तो हमारे साथ होता ही है, जीवन के हर पल में भी वह हमारे साथ होता है।

6. *वह प्रेम, पवित्रता, भलाई, धर्म दयालुता और अनुग्रह है।* हर बड़ा निजी गुण उसके स्वभाव की व्याख्या करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। वह धार्मिकता से प्रेम करता है

और अधर्म से वैर करता है (इब्रानियों 1:9)। उसके गुण हमारी सराहना के योग्य हैं। हम परमेश्वर पर निर्भर रह सकते हैं और उससे अच्छी चीज़ों की उम्मीद कर सकते हैं (याकूब 1:17)। जैसा वह था, वैसा ही वह हमेशा रहेगा क्योंकि उसका स्वभाव न बदलने वाला है (मलाकी 3:6)।

उसकी भलाई और दयालुता हम पर दिखाई जाती है, बेशक हम उसके हकदार नहीं हैं। यह आशिषें हमें उसकी आराधना में धन्यवाद करने को प्रेरित करने वाली होनी चाहिए।

उसके फाटकों से धन्यवाद,
और उसके आंगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो,
उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो!
क्योंकि यहोवा भला है,
उसकी करुणा सदा के लिए,
और उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है
(भजन संहिता 100:4, 5; 106:1; 107:1; 118:1, 29 भी देखें)।

7. *वह क्रोध करने वाला, घृणा करने वाला, द्वेष करने वाला, रूठने वाला और अतिक्रोध करने वाला परमेश्वर है।* पूर्ण रूप से पवित्र होने के कारण वह उससे जो अपवित्र है, घृणा करता है। जो भला है, उससे वह प्रेम रखता और जो बुरा है उससे घृणा करता है (इब्रानियों 1:9)। न तो वह दुष्टों को और न उनकी आराधना को स्वीकार करेगा। क्योंकि आराधना में इस्तेमाल की जाने वाली हर बात आवश्यक नहीं कि परमेश्वर को भाती हो इसलिए हमें चौकस रहना चाहिए कि हमारी आराधना का ढंग और विषय उसकी इच्छा से मेल खाता हो।

उसमें हर सराहनीय गुण, खूबी और विशेषता है। उसके अलावा या उसके जैसा कोई और है ही नहीं (यशायाह 46:9)। वह पवित्र से पवित्रतम, महान से महानतम और ज़बर्दस्त से ज़बर्दस्त है। वह सबके ऊपर और सब में है (इफिसियों 4:6)।

यदि हम परमेश्वर को जान लें तो हम उसकी महानता से प्रभावित, भयभीत और विस्मित हो जाएंगे। जितना हम परमेश्वर को जानेंगे उतना ही हम उसकी आराधना, आश्चर्य और महिमा से भर जाएंगे।

जो कुछ परमेश्वर करता है उसके लिए उसकी आराधना करना

हमें परमेश्वर की आराधना जो वह है, केवल इसलिए नहीं करनी चाहिए, बल्कि उसकी आराधना उसके लिए भी करनी चाहिए जो वह करता है, जो कर रहा है, और जो करेगा। परमेश्वर के इन कामों को हमारी समझ में आना हमारे लिए धन्यवाद और आराधना में उसकी प्रशंसा को व्यक्त करने के लिए प्रेरित करने वाला होना चाहिए।

दाऊद ने परमेश्वर की महिमा करने के लिए उसके कामों का तर्क ढूंढ़ा। भजन संहिता 106 में उसने लिखा:

याह की स्तुति करो!
यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है;
और उसकी करुणा सदा की है!

यहोवा के पराक्रम के कामों का वर्णन कौन कर सकता है,
या उसका पूरा गुणानुवाद कौन सुना सकता? (आयतें 1, 2)।

इस परिचय के बाद दाऊद ने फिर से इस्राएल की संभाल और उनके विद्रोह के कारण उन्हें दण्ड देने के परमेश्वर के सराहनीय कामों को याद किया।

तौभी जब-जब उनका चिल्लाना उसके कान में पड़ा,
तब-तब उस ने उनके संकट पर दृष्टि की!
और उनके हित अपनी वाचा को स्मरण करके अपनी अपार करुणा के अनुसार तरस खाया
(आयतें 44, 45)।

इस्राएल के साथ पेश आने के परमेश्वर के ढंग पर विचार करने के कारण दाऊद इस निष्कर्ष पर पहुंचा।

इस्राएल का परमेश्वर यहोवा
अनादिकाल से अनन्तकाल तक धन्य है!
और सारी प्रजा कहे आमीन!
याह की स्तुति करो (आयत 48)।

सारांश

पूरी आराधना का आधार परमेश्वर पर केन्द्रित है; क्योंकि बिना इसके परमेश्वर की आराधना नहीं होती। आत्मिक गतिविधियां, मनुष्य का योगदान, क्रमानुसार कार्यक्रम और सही उद्देश्य आराधना की आवश्यक बातें हैं, परन्तु ये आराधना का केंद्र नहीं होनी चाहिए। यह जगह केवल परमेश्वर की है।

परमेश्वर की आराधना में सही ढंग और उद्देश्य विकसित करने के लिए, हमें परमेश्वर को उसके स्वभाव की पूर्णता में जानना आवश्यक है। केवल परमेश्वर को जानने के द्वारा ही हमें उसका आदर करना और उसकी शान और महानता की महिमा और स्तुति सही ढंग से करना आ सकता है।

टिप्पणी

[1]जॉन ई. बरर्वस्ट, *वरशिप* (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1982), 29-30.